मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

Majhab nahi Sikhata aapas me ber Rakhna

उपर्युक्त सूक्ति प्रसिद्ध शायर इकबाल की है। उन्होंने उपनी एक देश प्रेम की कविता में लिखा है- ‘‘मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, हिंदी हैं हम , वतन है हिन्दोस्तां हमारा।’’ इन शब्दों में ऐसा जादू था कि प्रत्येक मजहब के लोग स्वयं को भातरीय मानते हुए भारत को स्वतंत्र कराने के कार्य में जुट गए।

भारत एक विशाल देश है। इसमें अनेक धर्मानुयायी, विभिन्न जातियाँ, विभिन्न भाषा-भाषी लोग रहते हैं। वेशभूषा, खान पान, बोलचाल की दृष्टि से विभिन्नता लक्षित होती है, किन्तु इस अनेकता के पीछे एकता की भावना निहित रहती है। यह यहाँ की सामाजिक संस्कृति की विशेषता रही है। एकता की इस अनुभूति ने हमें सामाजिक, राजनैतिक जीवन के निर्माण में मदद की है। भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी ने भ्रातृ-भाव पर बल दिया है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय एकता की सर्वाधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है। ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न हुई ? इस पर विचार करने की आवश्यकता हैं आज देश में विघटनकारी तत्व तेजी से अपना जोर पकड़ रहे हैं। कश्मीर, पंजाब, असम, आदि स्थानों पर उग्रवादी शक्तियाँ खुलकर खेल रही हैं। इससे हमारे राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को खतरा उत्पन्न हो गया है। कश्मीर और पंजाब की आतंकवादी गतिविधियों ने न जाने कितने ही निर्दोष व्यक्तियों की निर्मम हत्या की है। यह दौर अभी तक थम नहीं पाया है, यद्यपि सरकार विभिन्न उपाय बरत रही है। किन्तु अभी तक कोई उपाय कारगर सिद्ध नहीं हो सका है। इन विघटनकारी तत्वों को सख्ती के साथ दबाने की आवश्यकता है।

हमारे देश में कुछ लोग या समुदाय सांप्रदायिक बुद्धि उत्पन्न करने में बढ़-चढ़ कर काम करते हैं देश में राम-जन्म मंदिर और बाबरी मस्जिद का संघर्ष इसी बुद्धि का परिणाम है। ऐसा प्रतीत होता है कि देश के सम्मुख यही सबसे बड़ी समस्या है। सांप्रदायिक विद्वेष को मिटाना अत्यन्त आवश्यक है। सभी मजहबों में अच्छी शिक्षा दी गई है- ‘‘मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना’’। हम निःसंकोच कह सकते हैं कि यदि हमने अपनी सांप्रदायिक बुद्धि का परित्याग नहीं किया और जात-पात के भेदभाव को नहीं मिटाया तो हमारा पतन निश्चित है। प्रतिशोध और विद्वेष

की भावना से किया गया कोई भी काम कभी ठीक नहीं होता। प्रतिगामी शक्तियाँ कुछ समय के लिए भले ही विजयी हो जाएं, पर अन्त में मानव-धर्म की विजय निश्चित है।

भारत में पिछले दशक से कुछ ऐसा वातावरण बनता चला जा रहा है कि छोटी-छोटी बातों पर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं। पिछले दिनों गुजरात इसी प्रकार के दंगों की आग में सुलगता रहा। वहांँ के लोगों में आपसी विश्वास समाप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया। इसमें राजनीतिज्ञों एवं मीडिया ने भी दुरंगी चाल चली। स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने लोगों को मजहब के नाम पर भड़काया और मीडिया ने नकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ा-चढ़ाकर उछाला। विदेशांे तक में ऐसी छवि प्रस्तुत की गई कि भारत में सांप्रदायिक सद्भावना का वातावरण नहीं है। किसी एक विशेष दल को कुटिल राजनीति का निशाना बनाया गया। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। हमें यह बात भली प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि कोई सा भी मजहब किसी के साथ बैर-भाव रखना नहीं सिखाता। सभी धर्म परोपकार, प्रेम एवं एकता का संदेश देते हैं।

हमारे देश में धर्म एवं मजहब को मानने की पूरी स्वतंत्रता है, किंतु इसका अनुचित लाभ नहीं उठाया जाना चाहिए। धर्म और मजहब तभी तक हैं जब तक देश सुरक्षित हैं यदि देश की स्वतंत्रता ही खतरे में पड़ जाएगी तो हम और हमारा धर्म कहीं के भी नहीं रहेंगे। हमें उन बातों को प्रोत्साहित करना है जिनसे एकता की भावना मजबूत होती है। भावात्मक एकता की आज सबसे अधिक आवश्यकता है। हमारी संस्कृति में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' को महत्त्व दिया गया है। हम सबके सुख की कामना करते हैं। यदि देशवासी इस भावना को पूर्णतः अंगीकार कर लें, तो देश एकता के सूत्र में ग्रथित हो जाएगा।

मजहब ऊपर से जितना कलहकारी लगता है, अंदर से उतना ही शांतिदायक है। हमें मजहब का सच्चा अर्थ जानना चाहिए।

मजहब का सच्चा अर्थ जानने से कभी दंगा नहीं भड़केगा। सभी मनुष्य समान हैं। प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा का निवास हैं हमें दूसरे मजहब की अच्छाइयों को देखना चाहिए। इससे आपसी प्रेम बढ़ेगा और एकता की भावना मजबूत होगी। आज भारत को इसी भावना की परम आवश्यकता है। महिलाओं को आरक्षण नहीं, अधिकार चाहिए

भारत में पिछले एक दशक से महिलाओं को संसद तथा विधान सभाओं में आरक्षण की बात चल रही है। आरक्षण बिल अभी तक पास नहीं हो पाया है। नौकरियों में भी आराण के प्रयास हो रहे हैं। प्रश्न उठता है कि क्या केवल आरक्षण मात्र से महिलाओं की स्थिति मं सुधार आ जाएगा?

सच्चाई तो यह है कि महिलाओं को आरक्षण नहीं अधिकार चाहिए। बिना अधिकार मिले महिलाओं की स्थिति में मूलभूत सुधार नहीं आ सकता। वैसे तो आरक्षण मिलना भी उसका अधिकार है। अधिकार पाकर ही नारी अपनी स्थिति को बेहतर बना पाएगी। आरक्षण मिलना किसी समस्या का समाधान नहीं है।

महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाया जाना अत्यंत आवश्यक है। अधिकारों को देने से पूर्व उर्से आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना जरूरी है। आर्थिक स्वतंत्रता उसमें आत्मविश्वास का संचार करेगी।

स्वतंत्रता प्रप्ति के पश्चात तो भारतीय नारी के जागरण की गति आश्चर्य में डाल देने वाली है। जाब केवल स्त्री होने के नाते उसे किसी कार्य में प्रवेश से नहीं रोका जा सकता। वह प्रशासन की सर्वाच्च परीक्षाओं में अपनी योग्यता का पूरा परिचय दे चुकी है। आज उसे पुरूष के समान मत देने का पूर्ण अधिकार है। आज जीवन का कोई क्षेत्र उससे अछूता नहीं रह गया है। श्रीमती इंदिरा गाँधी को देश का प्रधानमंत्री बनाकर भारत ने यह सिद्ध कर दिखाया कि कि भातर पुनः अपनी नारी शक्ति को पहचानने लगा है। इससे पहले अपनी सेवाओं और योग्यता के बल पर स्व. सरोजनी नायडू स्वतंत्र भारत में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल नियुक्त की गई थीं। राजकुमारी अमृतकौर काफी समय तक केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में स्वास्थ्य मंत्री के रूप में कार्य करती रही हैं और विजयलक्ष्मी पंडित रूस, अमेरिका और ब्रिटेन में राजदूत तथा राष्ट्र संघ की महासभा की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी की स्थिति में अधिकाधिक सुधार लाने की दृष्टि से सरकार ने विभिन्न कदम उठाये हैं तथा उसे सामाजिक न्याय दिलाने के लिए अनेक कानून बनाये। संविधान ने उसे वे सभी अधिकार प्रदान किये हैं जो कि पुरूष को। परिवार में उसकी स्थिति को सदृढ़ बनाने के लिए सरकार की कृपा से अब उसे पैतृक संपत्ति में बराबर का अधिकार मिल गया है। पति के निरन्तर शोषण, दुव्र्यवहार और अत्याचार से बचने के लिए महिलाओं का राजनीति में आना नितांत आवश्यक है। तभी वे कानून बनाने की प्रक्रिया में महिलाओं के हितों की रक्षा कर सकेंगी।

भारतीय महिलाओं को इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए और समाज के सम्मुख दृढ़ता एवं आत्मविश्वास का परिचय देना चाहिए।

भारतीय महिलाएँ विश्व के किसी भी अन्य देश की महिलाओं से कम नहीं हैं। यह सही है कि हमारे देश में महिला साक्षरता की दरी अपेक्षाकृत कम है, पर सूझ-बूझ एवं कर्मठता मं भारतीय महिलाएँ बढ़-चढ़कर हैं। अब तो महिला सशक्तिकरण का युग है। हमें उनके हाथों को मजबूत बनाना है। उन्हें आर्थि, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से मजबूत बनाना है, तभी भारत मजबूत बनाना है तभी भारत मजबूत बन सकेगा। महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाना समय की माँग है।